International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 824-828 www.ijhssm.org

आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका विश्लेषणात्मक अध्ययन (बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

ओमप्रकाश* * संतोष कुमार***

Date of Submission: 24-07-2024 Date of Acceptance: 05-08-2024

शोध सारांश

बाढ़, सूखा और भुखमरी जैसे विभिन्न अवस्थाएँ सीधे तौर पर मानवीय क्रियाकलाप से संबंधित होती है। इसी तरह जल निकास कुप्रबंधन, वायु और जल प्रदूषण तथा वैश्विक गर्मी के बढ़ोतरी मानवीय क्रियाकलापों का ही परिणाम है। इसी तरह मानवीय या राष्ट्रीय विकास के तेजी से खनिज संसाधनों की खुदाई और जंगलों की कटाई भू-स्खलन और कीचड़ के बहाव के लिए जिम्मेदार है। इस तरह के प्राकृतिक आपदाओं से बचने तथा इसके प्रबंधन के विभिन्न उपाय होते है लेकिन आमजन के पास आपदा प्रबंधन संबंधी ज्ञान का प्रसार नही हो पाता है। इसमें मीडिया के सभी प्ररूपों को सामने आना चाहिए ताकि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर सके। इसी संदर्भ में बस्तर क्षेत्र में आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोसल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध प्रारूप का उपयोग किया गया है क्योंकि शोधकर्ता का मुख्य लक्ष्य आपदा की रोकथाम, शमन और राहत में मीडिया की भूमिका का गहन अध्ययन करना और आपदा प्रबंधन में मीडिया के हस्तक्षेप को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीकों की पहचान करना है। शोधकर्ता ने आपदा प्रबंधन में मौजूदा मीडिया की भूमिका और इसके कामकाज का पता लगाने के लिए स्थितिजन्य विश्लेषण का उपयोग किया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित एवं प्रसारित होने वाले मीडिया तंत्र में आपदा प्रबंधन की खबरों का प्रकाशन तो किया जाता है है लेकिन यह खबर अमजनों के लिए बहुत ही कम उपयोगी होता है।

कुंजीशब्द – आपदा, प्रबंधन, मीडिया, बस्तर

परिचय –

आपदा एक ऐसी प्राकृतिक या मानवीकृत जलजला है जो कि कभी भी किसी भी क्षेत्र में आ सकती है। ऐसे ही घटनाओं से बचने के लिए आपदा प्रबंधन जैसे कार्यों को किया जाता है। इसी तरह आपदा प्रबंधन को प्रभावी बनाने में यह आवश्यक है कि आपदा प्रभावित क्षेत्रों में उपलब्ध सभी प्रकार के सूचनाएँ पूर्णतया स्पष्ट होना चाहिए तथा सामान्य लोगो के पहुँच के भीतर होना चाहिए। आपदाएँ प्राकृतिक अथवा अप्राकृतिक अर्थात मानवीयकृत प्रकार की होती है। बहुत से प्राकृतिक आपदाओं का मुख्य कारण मानवीय क्रियाकलाप हो सकते हैं जो कि पर्यावरण का मुख्य रूप से उपेक्षा करने या प्रकृति से छेड़-छाड़ के कारण उत्पन्न होती है। इस प्रकार के प्राकृतिक आपदाओं को सही समय में रोका जा सकता है। भारतीय प्रेस परिषद ने कहा है कि "सभी मानवीय निर्मित आपदाएँ है इन आपदाओं में से बहुत से आपदाओं को रोका जा सकता है। इसके लिए जनसंचार माध्यमों का सही ढंग उपयोग करने की आवश्यकता है।" जनसंचार माध्यम से लोगों को शिक्षित और सूचनाओं का प्रसार किया जा सकता है। इसके साथ ही मानवीय क्रियाकलाप के दुष्परिणामों के बारे में और उनके कार्यों के बारे में बताया जा सकता है जो इस प्रकार के आपदाओं को बढ़ाता है।

आपदाएँ अप्रत्याशित घटनाएँ हैं जो बड़े पैमाने पर सामान्य जीवन में अचानक व्यवधान पैदा करती हैं। यह व्यवधान पर्यावरणीय या गैर-पर्यावरणीय खराबी का प्रभाव हो सकता है जिससे जान-माल का अधिक नुकसान होता है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान के अनुसार आपदा को "प्रकृति या मानव निर्मित घटना के रूप में परिभाषित किया जाता है जो समाज के सामान्य जीवन में अचानक व्यवधान पैदा करती है, जिससे जान-माल को इस हद तक नुकसान होता है कि उपलब्ध सामान्य सामाजिक और आर्थिक मूल्य आपदा के बाद सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए अपर्याप्त होते हैं" (राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, 2005)। इसी तरह Paal और Ghos (2013) ने आपदा प्रबंधन में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करने हुये बताते है कि मीडिया आपदा की प्रारम्भिक चेतावनी के साथ- साथ आपदा के घटनाओं को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Nayar (2010), के अनुसार, आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका जनसंचार माध्यमों और आपदा न्यूनीकरण एवं नियंत्रण के महत्व को जानने के लिए, संचार स्थिति को तीन आयामों - मंच, दर्शक और व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इसके प्रभाव के स्तर के आधार पर

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 824-828 www.ijhssm.org

अलग करना महत्वपूर्ण है। आपदा प्रबंधन में जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने मीडिया पेशेवरों और आपदा प्रबंधकों के बीच मौजूद अंतरों की पहचान कर उपयोगिता को स्पष्ट किया है। वर्तमान में ऐसी बहुत से आपदाएँ जो कि मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गई है जैसे बाढ़, तूफान, सूखा और भूस्खलन आदि। समाज का एक तपका हमेसा से एक असुरक्षित स्थान पर निवासरत रहते आ रहे है जो कि हमेसा किसी ना किसी प्रकार के आपदाओं से पीड़ित रहते है। इनका उस स्थान विशेष पर रहना मजबूरी भी होती ही क्योंकि यही से उनकी आजीविका के साधन प्राप्त होती है। लेकिन फिर भी जनसंचार माध्यमों में भी यह चर्चा का विषय नही होता ही। यही समय है कि जनसंचार माध्यम को इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इसी तरह राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम भी महत्वपूर्ण ढंग से आपदा नुकसान से निपटने, अफवाओं की रोकथाम और नकारात्मक भावना को सकारात्मक भावना में परिवर्तित करने में मदद कर सकती है।

शोध के उद्देश्य –

1.आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

2. आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

3. आपदा प्रबंधन में सोसल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध प्रारूप का उपयोग किया गया है क्योंकि शोधकर्ता का मुख्य लक्ष्य आपदा की रोकथाम, शमन और राहत में मीडिया की भूमिका का गहन अध्ययन करना और आपदा प्रबंधन में मीडिया के हस्तक्षेप को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीकों की पहचान करना है। शोधकर्ता ने आपदा प्रबंधन में मौजूदा मीडिया की भूमिका और इसके कामकाज का पता लगाने के लिए स्थितिजन्य विश्लेषण का उपयोग किया है।

परिणाम एवं विश्लेषण –

आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया की भूमिका –

जिस तरह आपदा संबंधी घटना घटित होती है तो उस समय इससे संबंधित खबरों को प्रिंट समाचार पत्रों में एका-एक प्रकाशित नही किया जा सकता है क्योंकि कोई भी प्रिंट समाचार पत्र प्रत्येक आधे या एक घंटे में समाचार पत्र का प्रकाशन नही करता है। चूंकि प्राकृतिक आपदा संबंधी घटनाएँ आकस्मिक ही होता है जिसके विभिन्न विभाग भले ही घटना संबंधी पूर्वानुमान के आधार पर सचेत करती है। प्रिंट समाचार पत्र भले ही तत्काल खबरों को घटना स्थल या प्रभावित लोगों तक नहीं पहुंचा पाती हो लेकिन आपदा संबंधी घटनाओं के पूर्वानुमान होने पर सरकारी विभागों के रिपोर्टों का प्रकाशन करके लोगों में जागरूकता लाया जा सकता है। इसी क्रम में बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने प्रिंट मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है-

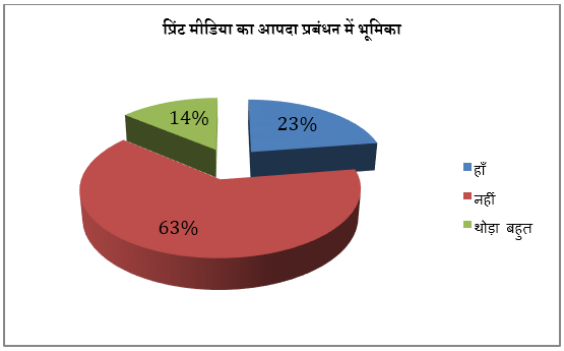

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 01: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया का आपदा प्रबंधन में भूमिका की आवृत्ती

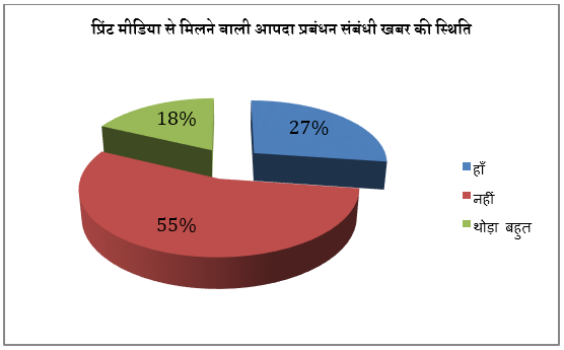

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 02: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

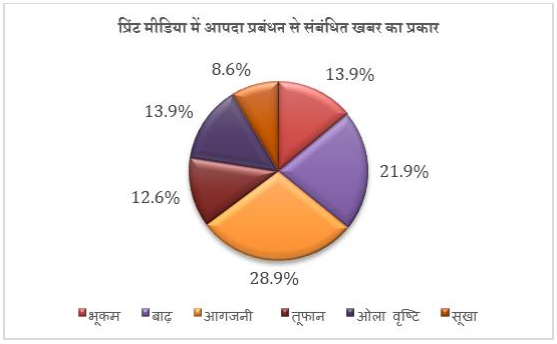

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 03: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 824-828 www.ijhssm.org

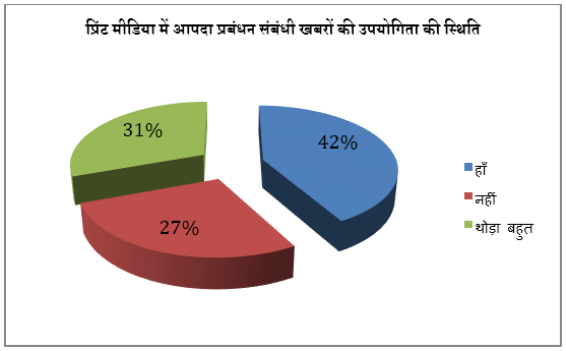

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 04: बस्तर संभाग में प्रिंट मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

आपदा प्रबंधन में प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि आपदा से पूर्व विभिन्न प्रकार के घटनाओं के प्रकाशन प्रिंट मीडिया में किया जाता है ताकि इस प्रकार के खबरों को पढ़कर आम जन आपदाओं से सचते होकर बचाव संबंधी उपाय को कर सके। इसी संदर्भ में बस्तर संभाग के पाठको का विचारों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि प्रिंट मीडिया का आपदा प्रबंधन के संबंध में अधिकतर (63 प्रतिशत) लोगों को समझ का अभाव पाया गया है। इसके साथ ही आधे से अधिक (55 प्रतिशत) पाठको के अनुसार प्रिंट मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरों का अभाव पाया गया है। बस्तर संभाग में प्रकाशित होने वाले अखबरों में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकम, ओला वृष्टि और सूखा संबंधी खबरों का प्रकाशन किया जाता है तथा इस प्रकार खबरों को 42 प्रतिशत पाठको ने उपयोगी और 27 प्रतिशत लोगों ने उपयोगी नहीं बताया है। आपदा पूर्व प्रबंधन में प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान होने के बाद भी बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले अखबारों में आपदा संबंधी जानकारी का अभाव पाया गया है।

आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका –

आपदा प्रबंधन की इस अवस्था में इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम की प्रमुख भूमिका होती है। उदाहरण स्वरूप सरकारी विभाग आपदाओं से संबंधित सूचना प्रसारण के तथ्यों एवं आंकड़ों के प्रति जागरूक होते है। ऐसे में जनसंचार माध्यम का दायित्व है कि वह लोगों को इन विभागों से प्राप्त सूचनाओं एवं आकड़ों का प्रसारण के माध्यम से आमजन को सजग रख सके। मौसम संबंधी पूर्वानुमान, आँधी –तूफान संबंधी पूर्वानुमान, सुनामी संबंधी पूर्वानुमान को आमजन तक इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से पहुंचाया जा सकता है। आपदा चेतवानी को वैज्ञानिक आधार को काफी गहराई से व्याख्या करना चाहिए और चेतवानी जारी करना चाहिए जिससे इन आपदाओं से जन और धन हानि से बचा जा सके।

इसी क्रम में बस्तर संभाग में आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया गया है-

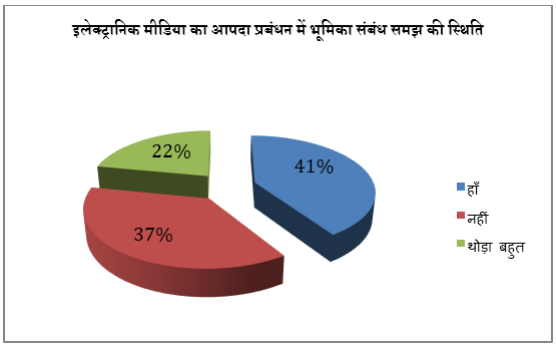

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 05: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया का आपदा प्रबंधन के भूमिका संबंधित सामान्य समझ

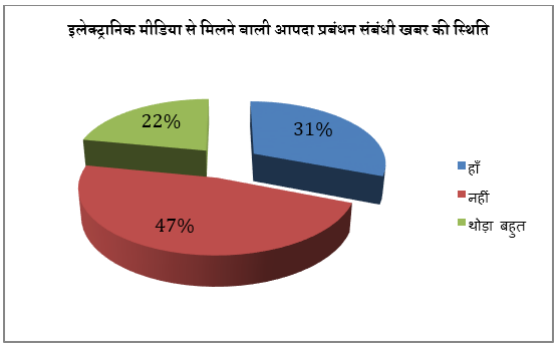

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 06: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

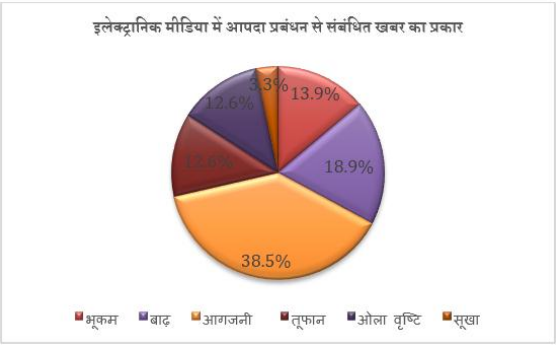

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)
आरेख क्रमांक 07: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 824-828 www.ijhssm.org

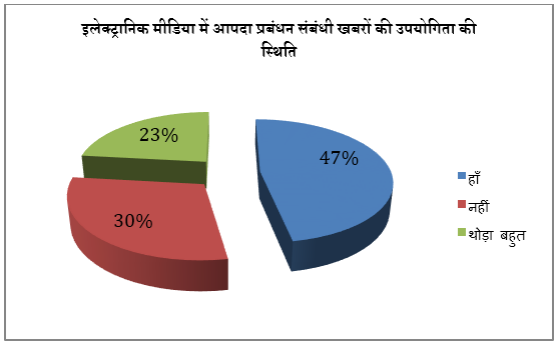

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 08: बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

आपदा प्रबंधन में इलेक्ट्रानिक मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि आपदा से पूर्व, आपदा के समय तथा आपदा के पश्चायत होने वाले विभिन्न प्रकार के घटनाओं को आडिओ एवं विडियों के माध्यम से प्रसारित किया जाता है ताकि इस प्रकार के खबरों को पढ़कर आम जन आपदाओं से सचते होकर बचाव संबंधी उपाय को कर सके। इसके साथ ही इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से आपदा संबंधी बचाव कार्य में भी सहायता किया जाता है। इसी संदर्भ में बस्तर संभाग के सूचनादाताओं के विचारों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया का आपदा प्रबंधन के संबंध में अधिकतर (41 प्रतिशत) लोगों को समझ का पाया गया तथा बहुत से ऐसे भी सुचनादाताओं (37 प्रतिशत) में आपदा प्रबंधन के संबंध समझ का अभाव पाया गया है। इसके साथ ही बहुत से ऐसे सूचनादाताओं (47 प्रतिशत) के अनुसार इलेक्ट्रानिक मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरों का अभाव पाया गया है। बस्तर संभाग में इलेक्ट्रानिक मीडिया में प्रसारित होने वाले चैनलों में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकम, ओला वृष्टि और सूखा संबंधी खबरों का प्रकाशन किया जाता है तथा इस प्रकार के खबरों को 47 प्रतिशत सूचनादाताओं ने उपयोगी और 30 प्रतिशत लोगों ने उपयोगी नहीं बताया है। आपदा पूर्व प्रबंधन में प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान होने के बाद भी बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले अखबारों में आपदा संबंधी जानकारी का अभाव पाया गया है।

आपदा प्रबंधन मे सोसल मीडिया की भूमिका –

वर्तमान में सोशल मीडिया से सभी परिचित है जो कि सूचनाओं का त्वरित प्रसार करने में मुख्य भूमिका अदा करता है। इस प्रकार कह सकते है कि सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान करने में सोशल मीडिया सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर सामने आया है। सोशल मीडिया के माध्यम से आपदा ग्रस्त जनपद या स्थान या क्षेत्र से त्वरित संपर्क में आकार बचाव और राहत कार्य में तेजी लाया जा सकता है। इसके साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार के खबरों को त्वरित प्रसारित करके सरकारी तंत्र को आपदा क्षेत्र में त्वरित कार्य के लिए मजबूर कर सकते है। चूंकि सोशल मीडिया आज के दौर में बहुत प्रभावशाली संचार माध्यम के रूप में उभर कर सामने आ रहा है इसलिए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में सूचनाओं के प्रसार के लिए बहुत ही उपयोगी अस्त्र के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।

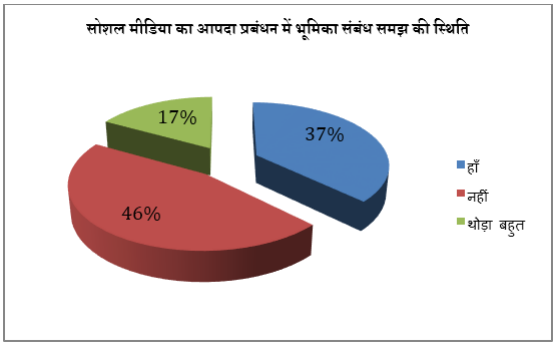

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 09: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया का आपदा प्रबंधन के भूमिका संबंधित सामान्य समझ

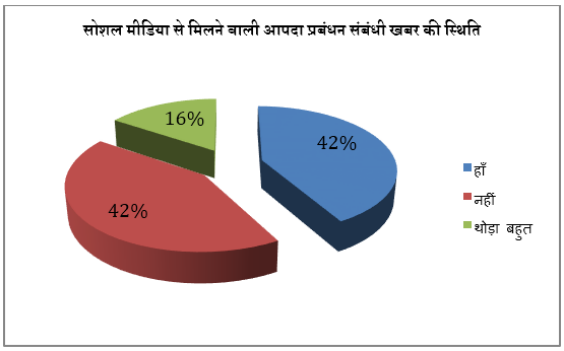

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 10: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधी खबरों की आवृत्ती

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 824-828 www.ijhssm.org

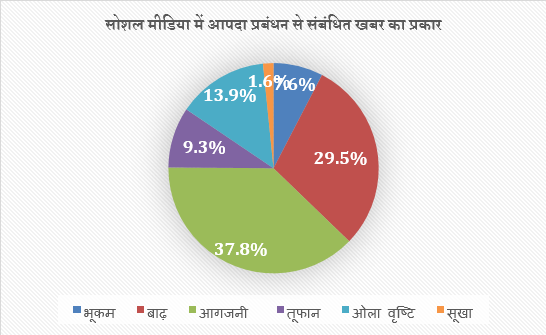

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 11: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की आवृत्ती

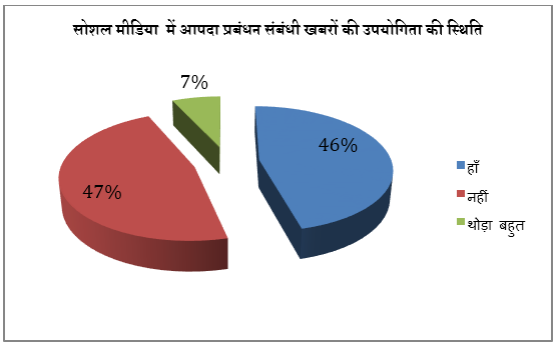

स्रोत – शोधार्थी द्वारा संकलित (2023)

आरेख क्रमांक 12: बस्तर संभाग में सोसल मीडिया से मिलने वाली आपदा प्रबंधन संबंधित खबरों की उपयोगिता

वर्तमान में सोसल मीडिया से सभी परिचित है कि खबरों या सूचनाओं का प्रसार करने का बहुत ही त्वरित माध्यम है। इस तरह सोसल मीडिया के माध्यम से आपदा के पूर्व, आपदा के समय तथा आपदा के पश्चायत के घटनाओं से संबंधित खबरों का प्रसार करने में महत्वपूर्ण साधन के रूप में आज स्थापित हो चुका है। इसी संदर्भ में बस्तर संभाग के सूचनादाताओं के विचारों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि सोसल मीडिया का आपदा प्रबंधन के संबंध में अधिकतर (46 प्रतिशत) लोगों को समझ का अभाव पाया गया तथा बहुत से ऐसे सूचनादाताओं में सोसल मीडिया में आपदा प्रबंधन संबंधित समझ पाया गया। इसके साथ ही बहुतायत (42 प्रतिशत) सूचनादाताओं के अनुसार सोसल मीडिया में आपदा प्रबंधन से संबंधित खबरे मिलने तथा नहीं के बात को स्वीकार किया है। बस्तर संभाग के सोसल मीडिया उपयोगकर्ता सूचनादाताओं ने सोसल मीडिया में आगजनी, तूफान, बाढ़, भूकम, ओला वृष्टि और सूखा संबंधी खबरे मिलने के बात को स्वीकार किया है तथा इस प्रकार खबरों को 46 प्रतिशत सोसल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने उपयोगी और 47 प्रतिशत लोगों ने उपयोगी नहीं बताया है।

निष्कर्ष –

वर्ष 2005 में कोबे, जापान में आपदा जोखिम न्यूनीकरण (डीआरआर) पर विश्व सम्मेलन में आपदा प्रबंधन में आपदा तैयारी को एक महत्वपूर्ण कमी के रूप में पहचाना गया। जबकि विकसित देशों में तैयारी एक प्रमुख जिम्मेदारी है, भारत जैसे विकासशील देशों में तैयारी पर प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्ति जितना ध्यान नहीं दिया गया है। तैयारी प्रतिक्रिया तंत्र से एक प्रगति है जो छोटे क्षेत्रों को लक्षित करते हुए स्थायी क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है। दूसरे शब्दों में, इसे आपदाओं से निपटने के लिए समूहों को संगठित करने की दिशा में उठाए गए कदम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ताकि वे आपदा के दौरान त्वरित कार्रवाई करने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहें। इसी संदर्भ में मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है और मीडिया को अपने भूमिका का निर्वहन करते हुये आपदा प्रबंधन संबंधी सभी तथ्यों को आमजन के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए ताकि आपदा से पूर्व तैयारी किया जा सके। बस्तर क्षेत्र में भी बाढ़, आगजनी, सूखा एवं जंगली पशुओं से खतरा संबंधी प्रकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। बस्तर क्षेत्र में प्रकाशित एवं प्रसारित होने वाले मीडिया में आपदा प्रबंधन की भूमिका बहुत ही नगण्य है जो कि एक प्रकार से मीडिया जगत के लिए चिंता का विषय है।

शोध संदर्भ –

[1]. Anderson, E. W. (1994, October). Disaster Management and the Military. GeoJournal, 34(2), 201-205.
[2]. Anzur, T. (2000). How to talk to the media: televised coverage of public health issues in a disaster.Prehosp Disaster Med., 15(4), 196–198.
[3]. https://www.iasbook.com/hindi/aapda-prabandhan-adhiniyam-2005-evam-ndma/
[4]. Pal,I., Ghosh, T., & C. Ghosh (2017). Institutional framework and administrative systems for effective disaster risk governance perspectives of 2013 cyclone Phailin in India. International journal of Disaster risk reduction. Vol 21. Page 350-359.
[5]. Piotrowski, C., & Armstrong, T. R. (1998). MASS MEDIA PREFERENCES IN DISASTER: A STUDY OF HURRICANE DANNY. Social Behavior and Personality: an international journal, 26(4), 341-345(5).